Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:7(3), July, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

अधूरी इच्छाएं और आत्मसंघर्ष का नाटक : हयवदन

डॉ. शेख अफरोज़ फ़ातेमा
सहयोगी प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
मौलाना आज़ाद कॉलेज ऑफ आर्ट्स, साइंस एंड कॉमर्स,
छत्रपति संभाजीनगर (महाराष्ट्र)
इमेल : skafrozfatema@gmail.com

साहित्य के क्षेत्र में 'गिरीश कर्नाड' एक बहुचर्चित नाम है। साहित्यिक क्षेत्र में नित नए-नए प्रयोगों के माध्यम से उन्होंने अपने लेखन की छाप छोड़ी है। वह अपने लेखन के माध्यम से सर्व परिचित हैं। वह एक सफल अभिनेता, फिल्म निर्देशक, लेखक, नाटककार के रूप में सर्वविदित हैं। वे ज्ञानपीठ पुरस्कार जैसे साहित्य के सर्वोच्च सम्मान से पुरस्कृत हैं। गिरीशजी का जन्म 19 मई, 1938 में एक कोंकणी भाषी परिवार में महाराष्ट्र के माथेरान में हुआ। उनकी आरंभिक शिक्षा धारवाड़ में हुई। उच्च शिक्षा उन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से प्राप्त की। कुछ समय के लिए वे शिकागो महाविद्यालय के फूलब्राइट महाविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर भी रहें।

इन सबके बावजूद गिरीश कर्नाड की ख्याति एक नाटककार के रूप में अधिक रही है। लेखन को लेकर गिरीश जी की एक खास बात है कि उन्होंने लिखने के लिए ना तो अंग्रेजी को चुना, जिस भाषा में उन्होंने एक समय विश्वप्रसिद्ध होने के अरमान संजोए थे और ना ही अपनी मातृभाषा कोंकणी को। जिस समय उन्होंने लिखना आरंभ किया उस वक्त कन्नड़ लेखन पर पश्चिमी साहित्यिक पुनर्जागरण का गहरा प्रभाव था। ऐसे समय में कर्नाड ने ऐतिहसिक तथा पौराणिक पात्रों से तत्कालीन व्यवस्था को दर्शाने का तरीका अपनाया जो बहुत लोकप्रिय हुआ। उनका लोक-तत्व और लोक-कथाओं के माध्यम से अपनी बात को पाठक तक पहुंचाने का अंदाज काफी लोकप्रिय रहा। कर्नाड जी के नाटक आधुनिक भारतीय रंग शैली की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। वे समकालीन भारतीय नाटककारों में से एक महत्वपूर्ण नाटककार हैं। इस संदर्भ में जयदेव तनेजा लिखते हैं, "आधुनिक भारतीय रंग शैली की तलाश में मूलधर्मी रंगकर्म पर बल दिया गया है। इसमें लोक पारंपरिक और संस्कृत नाट्य शैलियों के सार्थक एवं जीवन के जटिल अनुभवों को व्यक्त करने के बहुविध प्रयास किए गए। इस दृष्टि से गिरीश कर्नाड के 'हयवदन' तथा 'नागमंडल' विजय तेंदुलकर के 'घाशीराम कोतवाल' चंद्रशेखर कम्बार के 'जोकुमारस्वामी' सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के 'बकरी' और मणि मधुकर के 'खेला पोलमपुर' जैसे नाटकों को एवं अनेक निर्देशकों व्दारा किए गए इनके बहुरंगी प्रस्तुतिकरण का आधुनिक भारतीय रंगमंच में विशेष महत्त्व है।"[1] अत: हम यह कहे तो असंगत नहीं होंगा कि गिरीश कर्नाड केवल कन्नड़ भाषा के नाटककार नहीं तो वे भारतीय नाटककार हैं। कर्नाड जी के अनेक नाटक हिंदी एवं अन्य भाषाओं में अनूदित हुए हैं। उनके व्दारा लिखे गए नाटक हैं- ययाति, तुघलक, हयवदन, रक्त कल्याण, बलि, अंजू मल्लिगे, नागमंडल, अग्नि और बरखा, टीपू सुलतान के ख्वाब, बिखरे बिंब, पुष्प आदि। उनके इन नाटकों में से इस शोध-आलेख के केंद्र में होंगा उनके द्वारा लिखा गया नाटक 'हयवदन'।

एक पौराणिक कथा का आधार लेकर गिरीश जी ने सन् 1972 में 'हयवदन' यह नाटक मूल कन्नड़ भाषा में लिखा। बी. वी. कारन्त ने उसका हिंदी अनुवाद किया है। बेताल पच्चीसी की सिरों की अदला-बदली की प्राचीन कथा तथा टामस मान की 'ट्रांसपोज्ड हेड्स' की द्वंद्वपूर्ण आधुनिक कहानी पर आधारित इस नाटक की कथा है। देवदत्त,

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:7(3), July, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

पद्मिनी और कपिल के प्रेम त्रिकोण को दर्शाने वाली यह कथा अनादि काल से चले आ रहे स्त्री-पुरुष संबंधों और मनुष्य के अधूरेपन की कथा है, "पुरुष की अपूर्णता (मनुष्य की अपूर्णता) को विभिन्न काल-खंडों में रखकर अनेक नाटक लिखे गए हैं-'आधे-अधूरे', 'द्रोपदी', 'सूर्य की अंतिम किरण से पहली किरण तक' आदि में भी यही ध्वनि है। इन सभी नाटकों में स्त्री-पुरुष संबंध को लेकर त्रिकोण बनते हैं। 'हयवदन' की उपकथा में मनुष्य को पूर्ण मनुष्य होने से आरंभ होकर शरीर और मस्तिष्क, दोनों की श्रेष्ठता की कामना मुख्य कथा में प्रदर्शित की जाती है।"[2] 'हयवदन' (घोड़े का मुख) यह शीर्षक ही हमें विचार मग्न करता है। गिरीश कर्नाड ने नाटक में लोकतत्वों को दर्शाया है। लोक मिथक के माध्यम से स्त्री-पुरुष संबंधों में जो पूर्णत्व की इच्छाएं जागृत होती हैं उसकी ओर हमारा ध्यान खिंचा है। मनुष्य की जो पूर्णत्व की जो लालसा है वह कभी खत्म नहीं होती। इच्छए पूर्णत्व की माँग करती हैं और जब यह पूर्ण नहीं होती तो वह अधूरी इच्छाएं बन जाती है जो हमेशा पूर्णत्व की, कभी न खत्म होनेवाली पूर्णत्व की खोज करती है। क्या इच्छाएं कभी समाप्त होती हैं? मनुष्य एक इच्छा यदि पूर्ण होती है तो दूजी कब जन्म ले लेती है यह पता ही नहीं चलता। यह इच्छाओं का जन्म लेने का सिलसिला मनुष्य के मन-मस्तिष्क में एक चक्र की तरह होता है जिसका कोई ठोर नहीं कि वहां जाकर रुक जाए।

'हयवदन' नाटक की शुरुआत गणेश वंदना से होती है। गणेश स्वयं ही अपूर्णता के प्रतीक हैं। हाथी का सर और मनुष्य का शरीर। यह देवता विघ्नहर्ता कहलाई जाती है, "गिरीश कर्नाड ने अपने नाटक 'हयवदन' में मैसूर के पारंपरिक नाट्य रूप यक्षगान के कुछ तत्वों और व्यवहारों का इस प्रकार उपयोग किया है जिससे इस नाटक की कथा और अधिक नाटकीय और प्रामाणिक हो गई है।"[3] नाटक के बारे में कुछ समीक्षकों ने यह भी लिखा है कि, 'यह नाटक यक्षगान शैली में लिखा है।' किंतु खुद गिरीश जी ने कहाँ है, "यक्षगान के दो तत्व इस नाटक में इस्तेमाल किए गए हैं। एक-भागवत का चरित्र; और दूसरा, अर्धपटी (हाफ़ कर्टेन) का इस्तेमाल। जहां तो भागवत का प्रश्न है, वह सूत्रधार का एक और नाम है... और जहां तक अर्धपटी के इस्तेमाल की बात है तो उसका यक्षगान से अधिक प्रभावशाली प्रयोग कथकली में होता है।"[4] नाटक की शुरुआत में घोड़े के मुख के आदमी अपने पूर्ण मनुष्य की इच्छा के लिए भटकता दिखाई देता है। इच्छाएं इस नाटक का मूल है। ऐसी इच्छाएं जो पूर्णत्व की तलाश में है।

'पूर्णत्व' क्या है? क्या कभी मनुष्य पूर्णत्व का समाधान प्राप्त करने में सफल हुआ है? इच्छाएं, अभिलाषाएं हमेशा बढ़ती रही हैं। इच्छाएं खत्म हुई हैं ऐसा कोई मनुष्य कभी कहता है? यहां तक कि मरने के बाद भी यह कह कर इच्छाओं को पूरा किया जाता है कि 'मरने वाले की अंतिम इच्छा थी'। इच्छाओं का यह खेल कभी न खत्म होनेवाला खेल है।

'हयवदन' की मां कर्नाटक की राजकुमारी थी। उसने स्वयंवर में आए सौराष्ट्र के राजकुमार के सफेद घोड़े से शादी करने की इच्छा जताई। राजकुमारी के हठवश उस घोड़े से उसकी शादी हुई। पंद्रह वर्ष साथ रहने के पश्चात वह घोड़ा शाप मुक्त हुआ और एक गंधर्व बन गया। किंतु राजकुमारी ने हठ किया कि फिर से घोड़े का ही रूप धरोंगे तो साथ चलूंगी। किंतु हयवदन कहता है कि "मेरे जन्मदाता ने माता को शाप दे दिया... जा, तू हमेशा के लिए घोड़ी बन जा। बस, मेरी मां उसी क्षण घोड़ी बन गई। मैं अकेला बच गया - उसके अटपटे संयोग से उपजा पूत - आधा घोड़ा, आधा मनुष्य।"[5] अब हयवदन पूर्ण मनुष्य बनने की इच्छा लिए दर-दर भटक रहा है। राजकुमारी की इच्छा थी की गंधर्व फिर से घोड़ा बन जाए, गंधर्व की इच्छा थी कि शाप मुक्त होने के बाद राजकुमारी उसके साथ इंद्रपुरी चले। सबकी अपनी-अपनी इच्छाएं...

भागवत गाकर धर्मपुरी की कथा सुनाता है- दो युवक गहरे मित्र थे। दोनों में तन का, मन का अभिन्न संबंध था। एक था देवधर दुबली-पतली काया पर बुद्धि का धनी। दूसरा कपिल जो शरीर से हटाकट्टा और प्रभावदार किंतु बुद्धि के

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:7(3), July, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

मान में थोड़ा कमजोर। देवदत्त को अत्यधिक रूपवान पद्मिनी से प्रेम हो जाता है। देवदत्त को पद्मिनी से प्रेम है विवाह की इच्छा है, जो पूर्णत्व प्राप्त करती है। लेकिन क्या यह सही में पूर्णत्व है! कपिल भी पद्मिनी के रूप पाश में बंधा है। उसे भी पद्मिनी अच्छी लगती है।

पद्मिनी देवदत्त की ब्याहता है। उसके बच्चे की मां बनने वाली है। कपिल तो पद्मिनी के रूप के आकर्षण में बंधा है। पर पद्मिनी भी कपिल की देह के मोह में बंधी है। देवदत्त बुद्धि का धनी है। लेकिन कपिल की काया सुंदरता की मोहक आकृति। जब कपिल सुहाग के फूल तोड़ लाने के लिए पेड़ पर चढ़ता है तब पद्मिनी कपिल को निहारते हुए स्वगत कहती है, "कैसे बंदर की तरह पेड़ पर चढ़ गया! कहने से पहले ही कुर्ता उतार, धोती कस एक ही छलांग में डाली-डाली पर पहुंच गया, जैसे फुर्ती का फव्वारा हो! कैसी सुडौल काया, चौड़ी पीठ, तरंगों की-सी थिरकती मांसपेशियों से भरे समुद्र की तरह! और वह छोटी पतली कमर निहारती रही तो रोम रोम खिल उठा!"[6] पद्मिनी के मन में उठते कपिल के प्रति प्रेम के तूफान को देवदत्त भाप लेता है। देवदत्त को पाकर भी पद्मिनी के मन में कपिल के सुडौल, चंचल और आकर्षक शरीर को देखकर इच्छाएं जागृत होती हैं। कपिल सी चंचलता देवदत्त में नहीं है। उसमें ठहराव है। बुद्धि है, अच्छे-बुरे की समझ है पर कपिल-सा अल्हडपन, मादकता, भोलापन उसमें कहां। वह कपिल की इन्हीं खूबियों के कारण उसे पाने की इच्छाएं रखती हैं।

देवदत्त भी पद्मिनी की आंखों की चमक से उसकी सुप्त इच्छाएं भाँप लेता है। पद्मिनी पूर्ण पुरुष की तलाश में है। देवदत्त देवी के चरणों में अपना प्रण पूर्ण करने के लिए अपना मस्तक अर्पण करता है। देवदत्त की खोज में आए कपिल देवी के चरणों में देवदत्त का शीश देख अपना भी मस्तक अर्पण करता है। जब पद्मिनी दोनों की खोज में देवी के मंदिर में आती है तब वह दोनों को देख विलाप करती है। देवदत्त जैसा प्रेम करने वाला पति पाकर भी वह कपिल की इच्छा रखती है और यहां तो अब दोनों भी मरे पड़े हैं। पद्मिनी मां दुर्गा के चरणों में शरण लेती है। मां दुर्गा पद्मिनी को आज्ञा देती है कि वह दोनों के मस्तक उनके धडों पर रखें। परंतु मस्तकों की अदला-बदली हो जाती है। पद्मिनी कहती है, "क्या बताऊं, देवदत्त? कैसे समझाऊं, कपिल? देवी? प्रत्यक्ष प्रकट हुई- उसने तुम दोनों को प्राण दान दिए... लेकिन... लेकिन उतावली में मैंने...मैंने उस अंधेरे में... देवी, तू ही मेरी रक्षा कर। मेरी लाज रख! मुझसे... मस्तकों की अदला-बदली हो गई...सिरों की अदला-बदली हो गई! मुझे क्षमा करो...मुझसे भूल हुई...मैं पापिनी हूँ...जीने योग्य नहीं हूँ... क्षमा करो... क्षमा करो!"[7] इन सिरों की अदला-बदली के कारण देवदत्त और कपिल में पद्मिनी के स्वामित्व को लेकर झगड़ा खड़ा होता है। कपिल के शरीर पर लगे देवदत्त के मस्तक के कारण वह पद्मिनी पर अपना नैतिक स्वामित्व जताता है तो देवदत्त के शरीर पर लगे कपिल के मस्तक का कारण कपिल भी पद्मिनी पर अपना स्वामित्व जताता है। देवदत्त कहता है, "मेरी बात सुन लो। अंगों में सबसे ऊपर और सबसे श्रेष्ठ अंग सर है। वह अंग मेरे पास है। इसलिए देवदत्त स्वयं मैं हूं। यही शास्त्र-वचन है।"[8] पद्मिनी भी देवदत्त का साथ देती है क्योंकि वह हमेशा से पूर्ण पुरुष की तलाश में थी। कपिल कहता है, "मैं जानता हूं, तुम क्या चाहती हो, पद्मिनी! देवदत्त का मस्तिष्क और कपिल का फौलादी शरीर।"[9] वह बुद्धि और शक्ति का संगम चाहती थी और उसे इस अदला-बदली में देवदत्त की बुद्धि और कपिल की फौलादी देह का संगम मिला था। उसका इच्छा पुरुष उसे सामने दिखाई दे रहा था।

पद्मिनी ने अपना इच्छा पुरुष तो पा लिया। किंतु धर्मपुरी जाने के बाद कुछ दिनों में देवदत्त की आदतों में बदलाव आने लगा। मस्तिष्क देवदत्त का देह कपिल की। देवदत्त और पद्मिनी के कुछ संवादों को देखे तो पता चलता है कि पद्मिनी की इच्छाएं पूर्ण होकर भी अपूर्णता की ओर बढ़ी चली जा रही हैं-

"पद्मिनी - तुम देह पर चंदन का तेल क्यों लगाते हो?

देवदत्त - गंध अच्छी लगती है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:7(3), July, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

पद्मिनी - जानती हूं, लेकिन...।

देवदत्त - लेकिन क्या?

पद्मिनी - (हिचक ती हुई) पहले तुम्हारी देह से एक और ही महक आती थी- सहज, शहद मर्दानी महक - जो ज्यादा अच्छी लगती थी।

देवदत्त- (आश्चर्य से) लेकिन मैं तो बचपन से ही चंदन का तेल लगा रहा हूं।

पद्मिनी - वह बात नहीं। लेकिन काली के मंदिर से लौटने के बाद- तब तुम्हारी देह की ऐसी मर्दानी महक होती थी...।

देवदत्त - यानी वह कपिल की बिना धुली देह की, पसीने की महक?

(अविश्वास से) वह तुम्हें अच्छी लगती थी?"[10]

इस पर पद्मिनी निरुत्तर हो चुप हो जाती है। जिस पूर्ण पुरुष की तलाश में वह सब कुछ कर गई थी। अब वही पूर्ण पुरुष फिर से सुकुमार काया का धनी बनता जा रहा था। उसकी देह फिर कोमल हो रही है, भुजाएं ढीली पड़ रही है! कपिल की देहवाला देवदत्त अब फिर से पुरानी देवदत्त की काया की ओर बढ़ चुका है। अब फिर से कपिल की देह इच्छा। जंगल में कपिल की खोज करती है। क्या यह इच्छाएँ कभी खत्म नहीं होती? कुछ पाने के बाद फिर से कुछ और पाने की इच्छा? कपिल जो देवदत्त के सुकुमार शरीर को लेकर वन चला गया था, उसने बीते सालों में फिर से मेहनत-मशक्कत कर वह फौलादी शरीर हासिल कर लिया था। अब वह फिर से कपिल दिखाई दे रहा था। पद्मिनी को हमेशा कपिल की देह की चाह थी। आज वह देह फिर से उसी के समक्ष खड़ी थी।

वैसे देखा जाए तो पद्मिनी भी अधूरी है। व्यक्ति अपने भीतर के अभाव को भरने के लिए कोई ना कोई साधन तलाश करता है यह मनोवैज्ञानिक सत्य है। पद्मिनी भी देवदत्त और कपिल द्वारा यह अभाव भरने का प्रयास करती है। देवदत्त और कपिल, देवदत्त शरीर धारी कपिल और कपिल शरीर धारी देवदत्त में पद्मिनी उलझ कर रह गयी है। उसकी इच्छाएं... अतृप्त इच्छाएं... कभी न पूरी होने वाली इच्छाएं... इच्छाओं के इस मकड़ जाल में पद्मिनी उलझ गई थी। पद्मिनी कहती है, "तुम जीत गए कपिल! देवदत्त भी जीत गया! लेकिन मैं दो शरीरों की अर्धांगिनी- मेरे लिए जीत हैं, न हार। नहीं, नहीं, कुच्छ मत कहो। मैं जानती हूं, क्या कहोंगे। मैं स्वयं अपने से हजार बार कह चुकी हूं। भूल मेरी ही है, मैंने ही की सिरों की अदला-बदली, मैंने ही की थी, जिसका फल अब मुझे ही भुगतना चाहिए। मैं ही भुगतूंगी। भूल हुई, मैं इतनी दूर आई। चलने से पहले मैंने सोचा नहीं, सोच नहीं सकी।"[11] कपिल और देवदत्त द्वंद्व में एक दूसरे को मार देते हैं। पद्मिनी इन सारी इच्छाओं की त्रासदी सहती है।

इच्छाएं पद्मिनी की, त्रासदी पद्मिनी की। प्रकृति की सर्वोत्तम इकाई मनुष्य और मनुष्य की इच्छाएं, कामनाएं उसके दु:ख का कारण बनती हैं। पद्मिनी जैसी नारी जब मस्तिष्क और शरीर के बीच झूलती है तब उसकी इच्छाएं अधूरी रह जाती हैं। 'हयवदन' जो घोड़े का मुखधारी मानवीय देहवाला व्यक्ति है उसे पूर्ण पुरुष होने की इच्छा है और वह इसी इच्छा में साधु-संत, पीर-औवलियों के चरणों में माथा टेकते घूम रहा है कि उसे पूर्ण मनुष्य बनना है। वह शाप से मुक्ति चाहता है। इस नाटक के बारे में जयदेव तनेजा लिखते हैं, "यह नाटक मानव-जीवन के बुनियादी अंतविरोधों, संकटों और दबावों-तनावों को अत्यंत नाटकीय एवं कल्पनाशील रूप में अभिव्यक्त करता है। प्रासंगिक-आकर्षक कथ्य और सम्मोहक शिल्प की प्रभावशाली संगति ही हयवदन की वह मूल विशेषता है जो प्रत्येक सृजनधर्मी, रंगकर्मी और बुद्धिजीवी पाठक को दुर्निवार शक्ति से अपनी और खींचती है।"[12]

'हयवदन' अधूरी इच्छाओं का नाटक है। इसका हर पात्र अपनी अधूरी इच्छाओं को लेकर घूम रहा है। 'हयवदन' पूर्ण पुरुष की, देवदत्त पद्मिनी के स्वामित्व की, कपिल पद्मिनी से प्रेम की, स्वयं पद्मिनी बुद्धि और शक्ति के संगम से बने पूर्ण पुरुष की इच्छा...ये इच्छाएं अधूरी हैं। अनादि काल से आज तक कि याने कल, आज और कल की।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:7(3), July, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

इच्छाओं का यह आत्मसंघर्ष भी अनादि और अनवरत है। जिसे नाटककार कर्नाड जी ने 'हयवदन' के माध्यम से हमारे सामने रखा है।

संदर्भ :

1) आधुनिक भारतीय नाट्य विमर्श - जयदेव तनेजा, पृ. 37
2) हयवदन - गिरीश कर्नाड, नाट्य समीक्षक का वक्तव्य, पृ.7 और 8
3) आज के रंग नाटक -सं. इब्राहीम अलकाजी, पु. ल. देशपांडे, सुरेश अवस्थी, पृ. 29
4) हयवदन – गिरीश कर्नाड, पृ.12
5) वहीं, पृ.30
6) वहीं, पृ.55
7) वहीं, पृ.69
8) वहीं, पृ.71
9) वहीं,पृ.74
10) वहीं,पृ.82,83
11) वहीं, 102,103
12) वहीं, मुखपृष्ठ से - जयदेव तनेजा